भिखारी ठाकुर कृत 'बिदेसिया' की अंतर्वस्तु और प्रासंगिकता

डॉ० दर्शन पाण्डेय

भोजपुरी भाषा के शेक्सपियर के रूप में पहचान रखने वाले, लोक-नाट्यकार भिखारी ठाकुर एक विशिष्ट रंगकर्मी होने के साथ-साथ स्त्री-विमर्श एवं दलित-विमर्श के रचनाकर और एक संवेदनशील कलाकार के रूप में भी प्रतिष्ठित नाम हैं। भिखारी ठाकुर का जन्म 18 दिसंबर को बिहार के गंगा तथा सोन नदी के संगम पर बसे कुतुबपुर दियारा गांव में हुआ। इस क्षेत्र के लोग न केवल देश के विभिन्न राज्यों बल्कि गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस, सूरीनाम,फ़ीजी, गुयाना,हॉलैंड आदि देशों में ले जाये गए। यद्यपि भिखारी ठाकुर का पालन-पोषण एक निम्नवर्गीय परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम दल सिंगार ठाकुर और माता का नाम शिवकली देवी था। बचपन में कुछ समय तक स्कूल जाने के बाद उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया। गाँव के दूसरे चरवाहों के साथ गाय चराने जाने लगे। जहाँ अपने चरवाहे मित्रों के साथ लोकगीत गाते, नकल उतारते और शाम तक घर वापस आ जाते। भिखारी ठाकुर जैसे-जैसे बड़े हुए, उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा और अक्षर जोड़कर, शब्दों को बैठाकर कविता आदि करने लगे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, गांव में रहकर धन कमाने का ऐसा कुछ साधन भी नहीं था, इसलिए वे घर को छोड़कर खड़कपुर चले गए। जहाँ उन्होंने धन कमाना शुरू किया, वहीं पर उन्होंने रामलीला, रासलीला, जात्रा जैसे लोक-नटरंग देखने शुरू किए। एक बार घूमने के इरादे से भिखारी ठाकुर जगन्नाथ पुरी की यात्रा को निकले, वहाँ स्नान कर भगवान जगन्नाथ के दर्शन प्राप्त किए। इस घटना ने उनके जीवन को बदल दिया। उसके बाद खड़कपुर छोड़कर वापिस अपने गांव कुतुबपुर आ गए और साधु संतों की संगत में बैठकर रामचरितमानस का पाठ, भजन-कीर्तन सीखने लगे। धीरे-धीरे उन्हें इस कार्य में महारत हासिल हो गई, उन्हें लगभग पूरी रामचरितमानस कंठस्थ हो गई। इसके साथ ही कुछ गीत और काव्य आदि की रचना भी करने लगे। उन्होंने गाँव के युवाओं को जोड़कर रामलीला का मंचन प्रारंभ किया, उनके गीत और कविताएँ ऐसी सरल भाषा और लोकरंग लिए होती थीं कि दूर-दूर से लोग उनकी ओर से खिंचे चले आते थे। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी, अब वे रामलीला के प्रदर्शन के लिए गांव के बाहर भी जाने लगे। तैयब हुसैन ने इस बारे में लिखा है- " 'आम के आम और गुठलियों के दाम' की तरह उन्हें नाम और दाम दोनों मिले। नाम इस रूप में कि उनके गीत, नृत्य और नाटक लोक-परम्पराओं से जुड़े थे जो जल्दी ही लोकप्रिय हो गए,क्योंकि उनमें लोगों को अपनी छवि दिखाई देती थी, अपना सुख-दुख अपनी कहानी। इससे उनकी आत्मीयता स्वाभाविक थी। भिखारी के भीतर के कलाकार को संतोष मिला, प्रोत्साहन भी। फलतः उनका विकास होने लगा। फिर ऐसा दिन भी आया जब भिखारी का नाच 'बिदेसिया' नाम से शादी-ब्याह, पर्व-त्योहार और दूसरे उत्सवों में मनोरंजन के साथ सामाजिक प्रतिष्ठा से भी जुड़ गया।"(1) वास्तव में उनके

रचनाकार व्यक्तित्व ने अपने क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों को बहुत ही करीब से देखा था। वे अपने समाज की परंपराओं और स्त्रियों की दशा से भी भलीभांति परिचित थे।

भिखारी ठाकुर ने जितनी भी मौलिक रचनाएँ कीं, वे सभी अपने क्षेत्र की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। 'बिदेसिया' नाटक के माध्यम से उन्होंने स्त्री की विरह वेदना को प्रस्तुत किया है। जो उस समय की सबसे विकट समस्या थी। गांव के पुरुष जीविकोपार्जन के लिए अन्य प्रदेशों में जाते थे और उनके पीछे उनकी पत्नी और परिवार वाले संतप्त रहते थे। 'भाई बिरोध' नाटक में संयुक्त परिवार के विघटन की कथा है। 'विधवा विलाप' में विधवा स्त्री के प्रति होने वाला सामाजिक अत्याचार प्रस्तुत हुआ है। 'गंगा असनान' नाटक में धार्मिक आडंबर किस तरह समाज को खोखला कर रहे हैं, जबकि 'पुत्र बध' नाटक में नारी चरित्र का विचलन प्रस्तुत हुआ है। 'गबर घिंचोर' नाटक में जीते-जागते इंसान को 'वस्तु' समझने की मानसिकता दर्शाई गई है। 'ननद- भउजाई' नाटक में बाल विवाह की समस्या तथा 'कलयुग प्रेम' में समाज में बढ़ रही नशाखोरी की समस्या का चित्रण हुआ है। जबकि 'बेटी वियोग' नाटक के माध्यम से उन्होंने बेटी बेचने की प्रथा पर कुठाराघात किया है। इस प्रकार इन नाटकों के माध्यम से उन्होंने ऐसे कथानकों को चुना, जो समाज में ही चारों ओर व्याप्त थे, जिनके सुधार पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था उन्होंने इन समस्याओं को उठाकर जहाँ धर्म के ठेकेदारों को, धार्मिक आडंबरों के लिए खबरदार किया, वहीं समाज को भी अपनी रूढ़िगत परंपराओं को छोड़ने के लिए प्रेरित किया।

भिखारी ठाकुर का समय भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का युग था। उस समय समाज सुधार एवं स्वतंत्रता आंदोलनों का प्रचार-प्रसार पूरे देश भर में चल रहा था। भिखारी ठाकुर नामक मोनोग्राफ में तैयब हुसैन पीड़ित लिखते हैं- " भिखारी का काल अँग्रेजी राज के कारण गाँवों में उथल-पुथल का काल था। पहली बार भारत की सामंती संस्कृति में पूंजीवादी संस्कृति हस्तक्षेप कर रही थी। वर्ण-व्यवस्था रखने की कोशिश जारी थी। गृह-उद्योग नष्ट हो रहे थे। लकदक करती विदेशी चीजें शहर से गंवई हाट में प्रवेश करने लगी थीं। टैक्स के लिए अंग्रेजों का जमींदारों पर और जमींदारों का रैयतों पर दबाव बढ़ रहा था। नवजवान ग्रामीणों का शहर की ओर रुख स्वाभाविक हो गया था। ऐसे में उनका शहर चालू औरतों के शिकंजे में फंसना अथवा उनकी ब्याहता घरवाली पर गैर- मर्द का डोरा डालना उनकी नियति बन रही थी।"(2) भिखारी ठाकुर जी की सबसे बड़ी युगीन समस्या थी- पलायन वृत्ति। गांव का युवा रोजगार की तलाश एवं धन कमाने की चाह में अपने घर-गाँव को छोड़कर सुदूर प्रदेश में जाकर बस रहा था। पलायन की यह समस्या उन्होंने स्वयं भोगी थी। उन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक सरोकारों से जुड़े पक्षों को ऐसा बाँधा कि अभिव्यक्ति की एक शैली 'भिखारी शैली' के नाम से जानी जाती है। आज भी सामाजिक कुरीतियों की यह गूँज क्षेत्र विशेष में सुनाई पड़ती है। भिखारी ठाकुर ने समाज सुधार हेतु लोकधर्मी शैली का चयन किया। बिहार के प्रसिद्ध लोक-पारंपरिक नाच 'लोरिक

नाच' के माध्यम से अपने समाज की तत्कालीन समस्याओं को स्वर दिया, साथ ही लोगों में चेतना जागृत करने का प्रयास किया। वे लोक धर्मी रचनाकार ही नहीं थे, बल्कि सामाजिक कुरीतियों से लगातार लड़ने और जूझने वाले कटिबद्ध कलाकार थे। उन्होंने बिहार क्षेत्र की लोक शैली 'लोरिक नाच' प्रतिष्ठित किया था। भिखारी ठाकुर का सबसे ज्यादा ध्यान पलायन वृत्ति को रोकना था, इसके लिए उन्होंने बिदेशिया नामक शैली को पुनर्जीवित किया। यह 'लोरिक नाच' का ही एक रूप था, जिसमें एक स्त्री अपने पति के विदेश चले जाने पर परदेस जाने वाले बटोही को रोककर अपनी व्यथा सुनाती है। परदेश गये अपने पति को शीघ्र घर वापस आने का संदेश भिजवाती है। बटोही भी परदेस में रहने वाले उस परदेसी को ढूंढकर उसे घर वापस भेजने का भरसक प्रयास करता है। यह लोक शैली बिदेसिया के नाम से ही जग प्रसिद्ध हो गई।

वास्तव में बिदेसिया के मूल प्रवर्तक गुद्दूराय राय थे, लेकिन इस शैली में प्राण फूँकने का पूरा श्रेय भिखारी ठाकुर को ही जाता है। महेंद्र भाणावत के मत से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है- "बिदेसिया बिहार का संगीत, नृत्य और नाट्य मिश्रित सर्वाधिक लोकप्रिय मनोरंजन है। मूलतः इसके प्रवर्तक गुद्दरराय राय थे परंतु इसे अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने का सारा श्रेय भिखारी ठाकुर को है। पिछले पाँच दशकों में नाच के नाम पर जितनी ख्याति भिखारी ठाकुर ने अर्जित की उतनी और किसी ने नहीं। जवानी के दिनों में उनकी कमर और आवाज की लचक इतनी सम्मोहक थी कि अच्छे-अच्छे नृत्य गायक विशारदों के छक्के छूट जाते थे उनकी खूबसूरत गायकी अदायगी के आगे नामी गिरामी रंडिया तक पानी भरती थीं। उनकी कला के सम्मुख बड़े-बड़े शहरों की नाटक कंपनियां ठंडी हो जाती थी। भिखारी ठाकुर को देखने के लिए भीड़ पर भीड़ इतनी उमड़ पड़ती कि ब्लैक के टिकट भी चक्रवर्ती ब्लैक में बिकने लगते।"(3)

भारतीय लोक नाट्य की जो परंपरा मिलती है, उसमें भिखारी ठाकुर लोक नाटक के अनोखे और प्रखर प्रयोक्ता दिखाई देते हैं। उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से कविता गायन, अभिनय, नाटककार और नाट्य शिल्पी के रूप में नवीन प्रयोग कर भारतीय लोक रंगमंच को एक अनोखी लोकनाट्य शैली बिदेसिया दी। भिखारी ठाकुर ने अपने लेखन से सामाजिक विद्रूपताओं को प्रस्तुत किया, उन्होंने रोजगार के लिए पलायन करते युवाओं की समस्याओं को, शहरों में बसर करते नारकीय जीवन को बड़े करीब से महसूस किया। साथ ही पूरे भोजपुरी समाज को अपने ही अनेकानेक समस्याओं से लड़ते देखा है, जिसमें बाल विवाह, अनमेल विवाह, वैधव्य जीवन, संपत्ति के विवाद, अंधविश्वास, बहुविवाह प्रथा, युवाओं का पलायन और व्यभिचार की समस्या आदि ऐसी समस्याएँ थीं, जो किसी भी समाज में हो सकती हैं। इसके लिए पूरे समाज को जागृत होकर संघर्ष करना आवश्यक है, यही कार्य भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों के माध्यम से किया।

'बिदेसिया' नाटक में बीसवीं सदी के दूसरे दशक की कथा है। 'बिदेसिया' शब्द का अर्थ है विदेश में रहने वाला या विदेश जाने वाला। इस नाटक में विदेश का अर्थ भारत से बाहर अथवा समुद्र

पार नहीं है बल्कि भोजपुरी क्षेत्र के लोगों का रोजगार की खोज में कलकत्ता जाना है। इस नाटक में ऐसे खेतिहर मजदूर की कहानी है, जिसे वर्ष के कुछ दिनों के लिए ही काम मिलता था। बाकी समय वह बेकारी में गुजारता है। उसका विवाह हो जाता है, विवाह के कुछ समय पश्चात उसका गवना हो जाता है। अपनी नवविवाहिता पत्नी को घर ले आता है। अपनी पत्नी की सुंदरता को देखते हुए वह प्रेम से उसे प्यारी सुंदरी नाम से पुकारता है। कुछ दिन दोनों का समय अच्छे से बीतता है, कोई स्थायी काम-धंधा था नहीं, जिस कारण धन के अभाव में घर-गृहस्थी चलनी मुश्किल हुई। घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी, इस बात को लेकर युवक बेहद परेशान रहने लगा। वह अपने गांव के दूसरे लोगों को कलकत्ता और असम आदि राज्यों में रोजगार के लिए जाते देखता था। उनके हाथ में सदैव चार पैसे रहते थे, यह देखकर युवक अपनी पत्नी से कलकत्ता जाकर धन कमाने की बात कहता है। लेकिन पत्नी उसे घर पर ही रहने के लिए मनाती है और कुछ दिन रोक लेती है। परंतु घर की आर्थिक स्थिति को देखकर कुछ समय बाद युवक अपनी पत्नी को बिना बताए चुपचाप कोलकाता के लिए रवाना हो जाता है। पत्नी हृदय की चिंता, अभिलाषा,स्मृति आदि का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

“पिया गइलन कलकतवा ए सजनी

....

गोरवा में जूता नइखे, सिरवा पर छतवा ए सजनी

कइसे चलीहें रहतवा, ए सजनी।” (4)

जबकि कोलकाता पहुंच कर ग्रामीण युवक विदेशी बन जाता है। शहर में रोज़गार प्राप्त करने के कुछ दिनों में ही वह कुछ रुपये इकट्ठा कर लेता है। इसी दौरान उसकी मुलाक़ात एक रखेलिन से होती है, वह उस पर मोहित होकर उसी के साथ रहने लगता है। उसके साथ रहकर युवक अपने गाँव तथा अपनी पत्नी को भूल जाता है। उधर गाँव में युवक की पत्नी अपने पति के वियोग में रोती रहती है। एक दिन प्यारी सुंदर को एक बटोही मिलता है, जो काम की तलाश में कलकत्ता जा रहा था। उसे रोककर सुंदरी उससे विनती करती है कि उसका पति भी कलकत्ता गया है, वहाँ जाकर उसका पति उसे भूल बैठा है। उससे अपना संदेशा देने का आग्रह करती है। उसके आग्रह पर बटोही उसकी पूरी बात सुनता है, प्यारी सुंदरी अपना दुख बटोही को इन शब्दों में बताती है-

“ पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया।
रात नाही नींद दिन तनी न चएनवा, ए बटोही भइया
सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया।
रोवत-रोवत हम भइलीं पगलिनियां, ए बटोही भइया
एको ना भेजवलन सनेस, ए बटोही भइया।”(5)

बटोही प्यारी सुंदरी का संदेश सुनकर उसे वचन देता है कि वह कोलकाता में उसके पति को ढूँढ कर उसे गाँव वापस भेजेगा। सुंदरी को अकेला जानकर गाँव का एक मनचला युवक जो उसे भौजी कहता था, उससे छेड़छाड़ करने का प्रयास करता है। जिसका प्यारी सुंदरी बड़े ही कड़े स्वर में विरोध करती है और आस-पड़ोस के लोगों के आ जाने से वह मनचला युवक भाग खड़ा होता है। बटोही कोलकाता पहुंचता है, तो उसे प्यारी सुंदरी की वह विनम्र विनती भी याद रहती है। वह कलकत्ते में प्यारी सुंदरी के पति को खोजना प्रारंभ करता है, एक दिन सुंदरी द्वारा बताए गए रंग-रूप, डील-डौल के युवक से उसकी भेंट होती है। बटोही उसको गाँव में रहने वाली प्यारी सुंदरी की विरह-दशा से अवगत कराता है, यह सुनते ही युवक को अपने गांव, अपनी नवविवाहिता पत्नी की याद आती है। वह घर लौटने का निर्णय करता है, लेकिन रखेलिन स्त्री इसका विरोध करती है। वह तरह-तरह की बातें करके उसे कलकत्ता में ही रुकने का दबाव बनती है। लेकिन ग्रामीण युवक निश्चय कर लेता हैं कि वह अपने गाँव वापिस जाएगा। इसी दौरान उसका मकान मालिक आता है और उसका सारा पैसा ले लेता है, जिस कारण वह खाली हाथ अपने गाँव पहुंचता है। घर के बाहर से वह अपनी पत्नी को आवाज़ लगाता है, अपने पति की आवाज सुनकर सुंदरी घर का दरवाजा खोलती है। उसे द्वार पर देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता, वह बड़ी खुश होती है। लेकिन कुछ दिन बीतने के बाद कलकत्ता वाली रखेलिन पोटली बांधे, अपने दो बच्चों को साथ लेकर युवक के गांव आ धमकती है। तीनों में बहुत कुछ कहासुनी के बाद अंततः तीनों एक साथ रहने को राजी हो जाते हैं। वे तीनों एक साथ गांव में मिलजुल कर रहने लगते हैं। मंगल कामनाओं के साथ यहां कथा समाप्त हो जाती है।

'बिदेसिया' नाट्य के संवाद तथा गीत-संगीत ही इसे विशिष्ट एवं प्रभावी बनाते हैं। इस कहानी की प्रभावात्मकता इसके गीतों एवं संवादों में है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है, जिसमें सुंदरी नायिका अपने पति के वियोग में रो-रोकर कह रही है-

" करि के गवनवाँ भवनवाँ में छोड़ि कर
अपने परइलन पूरबवा बलमुआ
अँखिया से दिन भर, गिरे लोर ढर-ढर
बटिया जोहन दिन बीतेला बलमुआ।
गुलमा के नतिया आवेला जब रतिया त
तिल-भर कल ना परत बा बलमुआ।" (6)

इसका मंचन तत्कालीन समय और समाज को पुनर्जीवित करने का अतीव सामर्थ्य रखता है। आज के आधुनिक युग में किसी अन्य स्थान पर जाकर नौकरी करना, इतना अचंभित और व्यथित भी नहीं करता। किन्तु आज से सात-आठ दशक पूर्व की स्थिति बिलकुल अलग थी, उस समय न संपर्क और संवाद का कोई साधन मौजूद नहीं था। नौकरी करने गए व्यक्ति का अपने परिवार से मिलना कई महीने और कई बरस बीत जाने के बाद हो पाता था। कल्पना करके

देखिए सुंदरी जैसी नव विवाहित स्त्रियाँ अपने पति को याद कर फ़फक-फ़फक कर किस तरह रोती-बिलखती होंगी? बिदेसिया अपने युग की सच्ची कहानी है, जो उस समय घर-घर में दिखाई देती थी। यह प्यारी सुंदरी नामक असहाय बिरहिणी नारी की कथा नहीं थी, प्रत्येक उस युवक-युवती की कथा थी जो रोजगार के लिए अपने परिवार को पीछे छोड़ कर चला गया। इसकी मार्मिकता ही इस नाटक की सफलता है। जब 'बिदेसिया' नाटक का मंचन होता था तब हजारों की संख्या में भीड़ आती थी, जिसे संभालने के लिए पुलिस तक का इंतजाम किया जाता था। भिखारी ठाकुर ने बिदेसिया से काफी प्रसिद्धि पाई, वे इस नाटक की सफलता का पर्याय बन चुके थे। यद्यपि उनके जैसा प्रयास उस समय के अन्य रचनाकारों ने भी किया, किन्तु उन्हें कोई विशेष सफलता नहीं मिल पाई। भिखारी ठाकुर मंच का संचालन, अभिनय करने के साथ ही साथ नृत्य आदि भी करते थे। उनकी अभिनय कला और नृत्य की भाव भंगिमाओं ने दर्शकों को बांध लिया था। मनमोहिनी कला के दर्शन लिए उन्हें अन्य प्रदेशों में बिदेसिया के प्रदर्शन करने का बुलावा आता था। जिससे उनकी शोहरत तो बढ़ ही रही थी, वहीं जीविका के लिए पर्याप्त धनराशि भी मिल जाती थी। भिखारी ठाकुर लोकनाट्य परंपरा में ऐसे प्रथम नाटककार हैं, जिन्होंने भाषा और संवेदना दोनों स्तरों पर व्यापक जन-समुदाय से सीधा संपर्क बैठाया।

'बिदेसिया' मूलतः गीतात्मक नाट्य शैली है, जिसमें गीत और संगीत का विशेष महत्व है। गायन ऊँचे स्वर में किया जाता था। गीत में साथ देने के लिए कोरस भी होता था, जिन्हें 'समाजी' नाम की संज्ञा दी जाती थी। ये समाजी मंच पर ही उपस्थित रहते हैं। कभी-कभी 'ए' या 'हाँ' आदि बोलकर ताल देने का कार्य करते हैं। बीच में छोटा-मोटा अभिनय भी कर लेते हैं। गायन करने, वाद्य यंत्रों के वादन और भीड़ आदि के संवाद बोलने की भूमिका अदा करते हैं। बिदेसिया में गीतों के साथ नृत्य का भी संयोजन होता है, पर नृत्य, गीत आरोपित ना होकर घटना की माँग होते हैं। बिदेसिया शैली के नृत्य में स्वाभाविकता अधिक होती है, नृत्य में कमर की गति और उछल-कूद पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। बिदेसिया को किसी विशिष्ट रंगमंच की आवश्यकता नहीं थी, चार-पांच तख़्तों को जोड़कर भी मंच बना लिया जाता था। जिसके एक तरफ समाजी, अभिनेता और बाकी तीन तरफ दर्शक-वृंद बैठा करते थे। ना कोई पर्दा होता, ना दृश्यबंध की आवश्यकता होती थी। बिदेसिया शैली में पारसी मंच का ज्यादा महत्व नहीं होता, कलाकार रूप-सज्जा के लिए पाउडर, काजल, बिंदी, बाली आदि केवल यही प्रयोग करते। वेशभूषा में साधारण धोती, मिरजई और स्त्री पात्र साड़ी और ब्लाउज पहनते थे । अभिनय की दृष्टि से पारसी रंगमंच की तरह बिदेसिया नाट्य किसी तरह का भ्रम नहीं पैदा करते थे। इसमें पात्र और चरित्र का अस्तित्व मंच पर बराबर रखा जाता था। इसमें अतिरंजना का प्रयोग ना करके सहजता एवं स्वाभाविकता बनाए रखने का प्रयास रहता था। स्त्री पात्रों की भूमिका भी पुरुष कलाकार ही निभाते थे। इन विशेषताओं के फलस्वरूप आज बिदेसिया को राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान

मिल चुकी है। इस कृति के माध्यम से भिखारी ठाकुर का सांस्कृतिक योद्धा और समाज चिंतक का रूप मुख्यतः उभरा है। वास्तव में वे अपने जीवन काल में ही 'लीजेंड' बन चुके थे।

हिंदी रंगमंच में लोक शैलियों के अनेक नवीन प्रयोग होते रहे हैं। 'बिदेसिया' भोजपुरी क्षेत्र की लोक संस्कृति की अद्भुत कृति है। जिसमें रोजगार के लिए बदहाल श्रमिकों के पलायन की पीड़ा से संतप्त परिवार, समाज और लोक की व्यथा-कथा है। श्रम प्रवसन की विवशता का मार्मिक चित्रण इस रचना के माध्यम से हुआ है। "दरअसल, भोजपुरी प्रदेश का श्रम-प्रवसन निम्न जातियों के जीने (पेट भरने) की दौड़ है।"(7) नायक-नायिका के मिलन की सुखद परिणति से नाटक प्रासंगिक बन पड़ा है। हिन्दी लोक रंगमंच में यह कृति मील का पत्थर है, जिसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी।

संदर्भ:

1- भिखारी ठाकुर- तैयब हुसैन 'पीड़ित'- पृष्ठ-34
2- वही, पृष्ठ-81
3- लोक नाट्य परंपरा और प्रवृतियाँ- महेंद्र भाणावत,बाफना प्रकाशन, जयपुर, 1971-72
4- बिदेसिया- भिखारी ठाकुर, हिन्दी समय डॉट कॉम वेबसाइट से उद्धृत
5- वही
6- वही
7- भिखारी ठाकुर: प्रतिरोध का लोक स्वर, पृष्ठ- 69